Part - II Paper - 3 Unit - 3

Cotton Textile Industry of India

S. Mazumdar

मानव की प्राथमिक आवश्यकताओं में से एक है वस्त्र। यह वस्त्र कई प्रकार के होते हैं ऊनी, रेशमी, सूती। जब मानव सभ्यता का विकास नहीं हुआ था तब भी मानव पेड़ों की छालें वस्त्र के रूप में पहनते हैं आज के समय वस्त्रों में से सूती वस्त्र एक उद्योग का रूप ले सबसे आगे हैं।

सूतीवस्त्र उद्योग का इतिहास :— इस उद्योग की स्थापना का श्रेय भारत को ही है। 500 साल पहले भी सूतीवस्त्र उद्योग का केन्द्र भारत ही था, सिन्धुघाटी सभ्यता में हड़प्पा तथा मोहनजोदाड़ें में इसकी खोज ने प्रमाणित कर दिया कि भारत शुरू से ही सूती वस्त्र का उत्पादन कर विदेशों को निर्यात करता है।

भारत में यह उद्योग कुटीर उद्योग की तरह था पर आधुनिक उद्योग के रूप में इसका विकास 1818 ई० में कलकत्ता के निकट फोर्ट ग्लोस्टर में शुरू हुआ। 1815 में मड़ौच में भी एक अंग्रेज ने सूती वस्त्र उद्योग की स्थापना की, पर ये दोनों ही प्रयास असफल रहें। 1850 के बाद आधुनिक सूतीवस्त्र उद्योग की सफल स्थापना हो सकी। 1905 में स्वदेशी आंदोलन के कारण कपास उत्पादन को बल मिला तब से यह एक अग्रगण्य उद्योग के रूप में स्थापित है।

उद्योग स्थापना की शर्तें :— प्रत्येक उद्योग की तरह इस उद्योग की स्थापना एवं विकास की कुछ प्रमुख शर्तें हैं।

a) **शक्ति के स्त्रोत :—** उद्योग के सफल संचालन के लिए सस्ता ईंधन, जल बिजली और कोयले की आवश्यकता शक्ति संसाधन की भाँति चाहिए और अगर यह स्त्रोत निकटस्थ हो तो उद्योग के लिए अति उत्तम होता है।

b) **पर्याप्त जल :—** इस उद्योग में धागे बनाने, उनने रंगने इत्यादि जैसे कई कार्यों में पर्याप्त जल की

आवश्यकता होती है

c) जलवायु :- इस उद्योग के लिए आद्र जलवायु एक प्रमुख शर्त है, जिससे धागा टूटने से बचता है।

d) परिवहन :- उद्योग में निर्मित माल बाजार तक पहुँचाने एवं कच्चा माल उद्योग तक लाने में उत्तम परिवहन की आवश्यकता होती है।

e) सस्ते श्रमिक :- इस उद्योग के संचालन में सस्ते एवं कार्यकुशल श्रमिकों की आवश्यकता होती है

f) कच्चा माल :- इस उद्योग का कच्चा माल कपास है, जो एक शुद्ध कच्चा माल है अर्थात निर्माण प्रक्रिया में यह वजन नहीं घटाता। अतः उद्योग के लिए निकटवर्ती कच्चा माल उत्पादन क्षेत्र ना भी हो तो उद्योग की स्थापना की जा सकती है।

सूतीवस्त्र उद्योग का वितरण :- सूती वस्त्र उद्योग एक विकेन्द्रीकृत उद्योग है, इस उद्योग का वितरण निम्न राज्यों में मुख्यतः है।

1) महाराष्ट्र :- यह राज्य उद्योग विकास की सभी शर्ते यथा, कच्चा माल स्रोत की समीपता, बन्दरगाह परिवहन सुविधा के लिए, सागरीय नमी से आद्र जलवायु, घनी आबादी से सस्ते श्रमिक एवं पर्याप्त जल विद्युत शक्ति संसाधन के रूप में प्राप्त होने के कारण इस उद्योग का विकास यहाँ हुआ है, उद्योग के प्रमुख केन्द्र है :- शोलापुर, अकोला, अमरावती, वर्धा, पुणे, सतारा, कोल्हापुर, नागपुर इत्यादि। सूतीवस्त्र उत्पादन में यह पहले स्थान पर है।

2) गुजरात :- सूतीवस्त्र उत्पादक के रूप में यह द्वितीय स्थान पर है, इस राज्य में भी महाराष्ट्र की तरह सभी सुविधाएँ उपलब्ध है, यहाँ के प्रमुख उत्पादक केन्द्र है ~~इन्दौर~~, ~~उज्जैन~~, ~~देवास~~, ~~रतलाम~~ बड़ोदरा, सूरत, पोरबंदर, भड़ौच, भावनगर इत्यादि इसमें अहमदाबाद केन्द्र को "भारत का मैनचेस्टर" कहा जाता है।

3) मध्यप्रदेश :- यह राज्य प्रमुख कपास

उत्पादक राज्य है, साथ ही सस्ते श्रमिक, रेल परिवहन तथा कोयला शक्ति संसाधन के रूप में उपलब्ध है। यहाँ के प्रमुख केन्द्र इन्दौर, उज्जैन, रतलाम, ग्वालियर इत्यादि।

4) **उत्तरप्रदेश** :- उत्पादन की दृष्टि से यह चौथे स्थान पर है, कानपुर उत्तर भारत का मैनचेस्टर कहलाता है, यहाँ विकसित बाजार, परिवहन की सुविधाओं के कारण यहाँ भी इस उद्योग का विकास हो पाया है। यहाँ के प्रमुख केन्द्र हैं हाथरस, मुरादाबाद, मोदीनगर, आगरा, अलीगढ़, इटावा, वाराणसी, लखनऊ इत्यादि।

5) **पश्चिम बंगाल** :- महाराष्ट्र के विपरीत यहाँ यह उद्योग बाजार आधारित उद्योग है अर्थात बाजार की उपलब्धता इस उद्योग को यहाँ विकसित करने में मदद की है, कपास देश के अन्य भागों से आयात कर लिया जाता है जबकि शेष सभी शर्तें यहाँ बहुतायत में उपलब्ध होने से प० बंगाल में सूती वस्त्र की स्थापना सफल रही, यहाँ के प्रमुख केन्द्र हुगली नदी के दोनो किनारे पर, हावड़ा, २४ परगना जिलों में हैं, कोलकाता सबसे बड़ा केन्द्र है।

6) अन्य राज्य तथा उनके प्रमुख केन्द्र :-

a) तमिलनाडु - कोयम्बटुर, सलेम, मद्रास, पेराम्बुर, तिरूचिरापल्ली, पाण्डीचेरी

b) कर्नाटक - देवनागिरि, हुबली, मैसूर बंगलूरू, बेलारी, गुलबर्गा।

c) आन्ध्रप्रदेश - हैदराबाद, वारंगल, गुंटुर, औरंगाबाद, सिकन्द्राबाद

d) राजस्थान - जयपुर, किशनगढ़, कोटा, अजमेर, भीलवाड़ा, उदयपुर

e) पंजाब - अमृतसर, लुधियाना, फगवाड़ा

f) बिहार - गया, भागलपुर, पटना

g) केरल - अलवाय, त्रिवेन्द्रम, अलप्पी.

मॉंग एवं खपत :- भारत में सूती वस्त्र की मॉंग

अधिक है जबकि उपलब्धता कम होती जा रही है, हालांकि कई समस्याओं के बावजूद इस उद्योग को भारत सरकार पूर्ण समर्थन देती है, जिससे इस उद्योग में पूंजी निवेश बढ़ा है।

निर्यात :— बीसवीं शताब्दी के शुरू में भारत कपड़े का आयात करता था। आज वह पर्याप्त कपड़े का निर्यात करता है, भारतीय वस्त्र का सबसे बड़ा ग्राहक अमेरिका, यूरोपीय देश, रूस जापान, स्वीडन, सिंगापुर श्रीलंका, बांग्लादेश है। भारतीय वस्त्र के साथ धागे का भी निर्यात किया जाता है।

—×—